AU Talk

Spring 2025

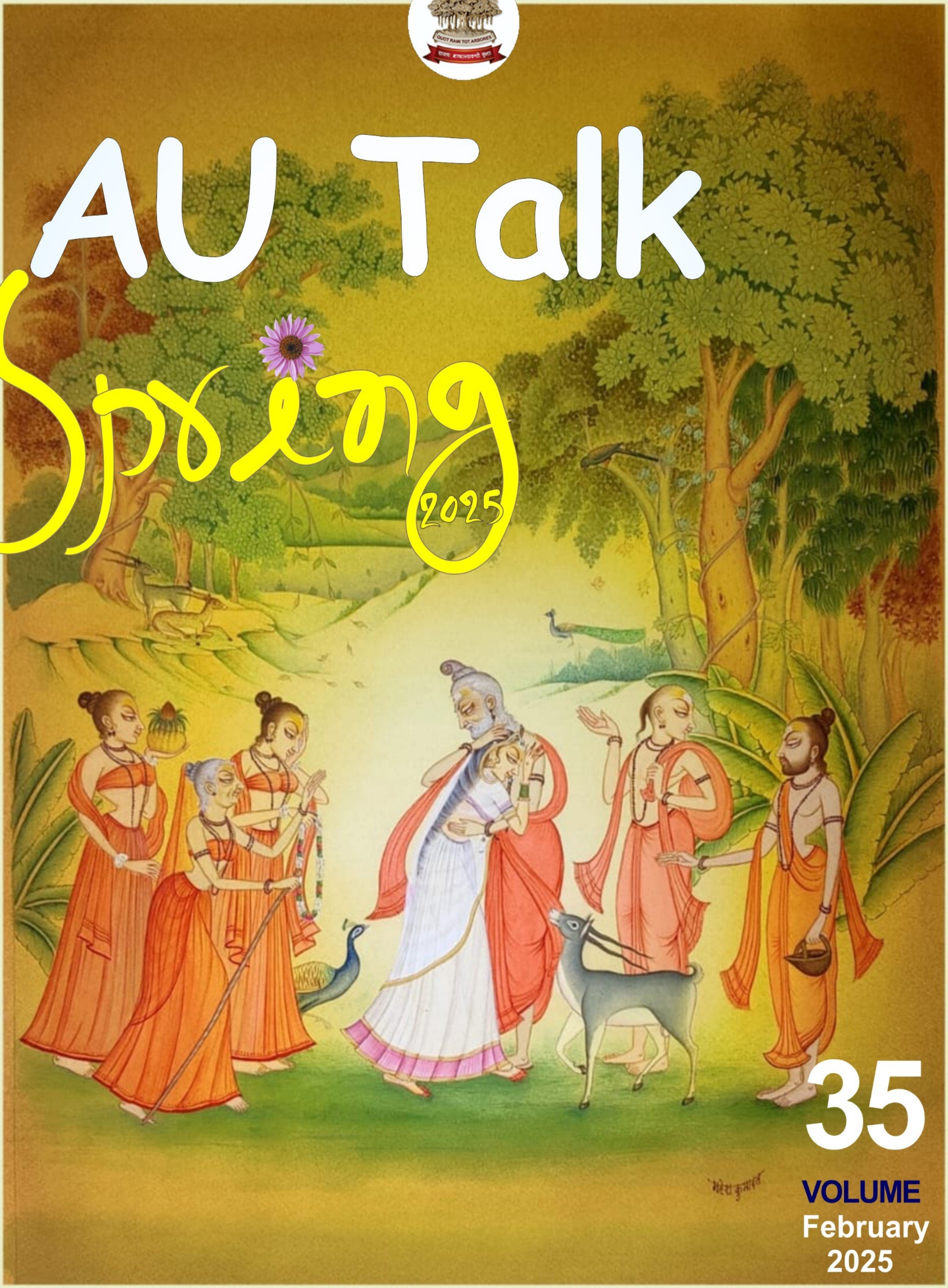

35

VOLUME

February 2025

What's up on AU Campus

Editorial Board

AU TALK is a monthly digital newsletter of the University of Allahabad. **AU TALK** a long cherished dream and a brainchild of Hon'ble Vice Chancellor, has been regularly and successfully disseminating news and information on various academic and research activities happening across the Departments/Centres of the University. The original idea behind the digital platform is not only to spread out information about various developments related to the departments, but also, to revitalize a connection among them. AU TALK as a digital space facilitated its faculty members to publish their own informative articles, research accomplishments and potential future plans.

Patron: ***Hon'ble Vice Chancellor***

Members of the Editorial Board:

Chief Editor - Prof. Chandranshu Sinha, Head, Dept. of Psychology

- Dr. Nakul Kundra, Associate Professor, Dept. of English
- Dr. Jaswinder Singh, Assistant Professor, Dept. of English
- Dr. Charu Vaid, Assistant Professor, Dept. of English
- Dr. Shiban Ur Rahman, Assistant Professor, Dept. of English
- Dr. Sandeep Kumar Meghwal, Assistant Professor, Dept. of Visual Arts
- Mr. Vishal Vijay, Assistant Professor, Centre for Theatre & Film
- Ms. Jigyasa Kumar, Curator, Vizianagram Hall & Museum

To publish your news/event in the upcoming edition, please send the write-up alongwith a relevant picture to:

vizianagramcurator.au@gmail.com

Contents

	Page No.
Mahakumbh 2025: Seminar organized by Department of Anthropology	4-6
Department of Economics	7
Department of Education	8
Department of Sociology	9
Department of Sanskrit	10-12
Internal Complaints Committee	13
Book & Movie of the Edition	14

महाकुम्भ 2025: मानवविज्ञान के आईने में" विषयक राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन

मानवविज्ञान विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, आई.क्यू.ए.सी. प्रकोष्ठ, इलाहाबाद विश्वविद्यालय और संस्कृति विभाग, उत्तरप्रदेश सरकार के द्वारा दिनांक 20 फरवरी 2025 को आयोजित "महाकुम्भ 2025: मानवविज्ञान के आईने में" विषयक राष्ट्रीय संगोष्ठी में महाकुम्भ के मानवविज्ञान को केंद्र में रखकर विचारों को स्पन्दित और उद्वेलित करने योग्य वृहत आयोजन किया गया। संस्कृति विभाग, उ. प्र. सरकार के कलाकुंभ परिसर, सेक्टर 7, महाकुम्भ नगर में आयोजित की गई इस संगोष्ठी को इलाहाबाद विश्वविद्यालय की माननीय कुलपति महोदया प्रो. संगीता श्रीवास्तव के प्रबुद्ध प्रेरणा के परिणामस्वरूप आयोजित किया गया। माननीय कुलपति महोदया का सदैव प्रयास रहता है कि विश्वविद्यालय के शोध और विमर्श को आम जनमानस के कल्याण हेतु सदैव उपयोग में लाया जाना चाहिए और इसी के तहत महाकुम्भ 2025 में कुम्भ नगरी में इलाहाबाद केंद्रीय विश्वविद्यालय का भी एक केंद्र बनाया गया। इसी के दृष्टिगत संगोष्ठी के विषय के तहत महाकुम्भ के मानववैज्ञानिक दृष्टिकोण पर मंथन किया गया एवं आयोजन स्थल के रूप में महाकुम्भ के कलाकुम्भ परिसर का चयन किया गया ताकि बंद कक्षों में आयोजित गोष्ठियों के विपरीत आम जनमानस तक ज्ञान-कुम्भ-मंथन का लाभ पहुँच सके।

संगोष्ठी में मुख्य अतिथि के रूप में प्रो. एस. एम. प्रसाद, एमेरिटस साइन्टिस्ट, सी.एस.आई.आर. और पूर्व विभागाध्यक्ष, वनस्पति विज्ञान विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, मुख्य वक्ता के रूप में प्रो. जी.एस. शुक्ल पूर्व कुलसचिव तथा निदेशक, स्वास्थ्य विज्ञान संकाय, उत्तर प्रदेश राजर्षि टंडन मुक्त विश्वविद्यालय एवं विशिष्ट वक्ता की भूमिका में मेजर (डॉ) हर्ष कुमार उपस्थित रहे। इस कार्यक्रम की अध्यक्षता मानवविज्ञान विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. राहुल पटेल ने की।

विशिष्ट वक्ता के रूप में मेजर (डॉ) हर्ष कुमार ने मानवविज्ञान की अध्ययन पद्धति में अवलोकन की भूमिका से महाकुंभ में दिख रही सांस्कृतिक विशेषताओं को इंगित किया , भारत की देशज ज्ञान परंपरा के अनुरूप भारत को शीर्ष भारत कहने पर जोर दिया और राष्ट्र की अखंडता-एकता को बनाए रखने के लिए महाकुम्भ आयोजन को राष्ट्रीय एकता के एक उत्कृष्ट अवलोकित घटना के रूप में प्रतिविम्बित किया। उन्होंने अपने मौलिक कर्तव्यों को सर्वोपरि रखने पर जोर दिया ताकि राष्ट्र की उन्नति हरेक क्षण होती रहे।

मुख्य वक्ता के रूप में पेशे से चिकित्सक और शिक्षक आचार्य (डॉ) जी. एस. शुक्ल जी ने संपूर्ण महाकुंभ की विशेषताओं को मानवविज्ञान की प्रत्येक शाखा से जोड़ते हुए अप्रतिम वैचारिक विमर्श प्रस्तुत किया, जहाँ उन्होंने सामाजिक-सांस्कृतिक मानवविज्ञान के अंतर्गत महाकुंभ में विभिन्न संस्कृतियों के आपसी समागम तथा सहयोग को रेखांकित किया, वहीं जैविक मानवविज्ञान के रूप में महाकुंभ के संस्कारों को भारतीय मानव जीवन के षोडश संस्कारों की वैज्ञानिकता के संदर्भ में उद्घाटित किया। पुरातात्विक मानवशास्त्र के रूप में आचार्य शुक्ल ने महाकुंभ की भौतिक संरचना को केंद्र में रखकर मेले की बसाहट की विविधता को चिन्हित किया। इसी क्रम में भाषाई मानवविज्ञान के स्वरूप को महाकुंभ में बनने वाले अनेक भाषाई संकुलों को पोषणीय आधार पर शब्द संरचना के साथ उनके अर्थ को रेखांकित किया। आचार्य शुक्ल जी

ने व्यवहारिक मानवशास्त्र के रूप में वर्तमान समय में युवाजन के विविध समस्याओं को चिन्हित किया और उनको योग-प्राणायाम, नियम-संयम से दूर करने का आग्रह किया। इस हेतु मानवशास्त्रीय ज्ञान को सामान्यजन तक पहुंचाने का आग्रह किया और उपरोक्त को ही कुंभ का चिंतन कह कर मानवता के कल्याण के लिए अनुप्रयुक्त करने की प्रार्थना की ।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि प्रो. एस. एम. प्रसाद ने महाकुंभ मेला के उद्भव, विकास और विस्तार से अपने उद्बोधन का प्रारंभ किया और कुंभ की वैज्ञानिकता पर विशेष प्रकाश डाला जहाँ उन्होंने पृथ्वी की उत्पत्ति, जीवन के उद्भव, जीवन के आवश्यक कारक के प्रकार्य जैसे प्रोटीन, कार्बोहाइड्रेट, लिपिड इत्यादि को बहुत सहज तरीके से मानव विकास से जोड़कर वर्तमान में होने वाली मानव बीमारियों विशेष कर कैंसर पर अद्भुत तथ्य प्रस्तुत किए और उसके समाधान के लिए उपाय सुझाए । प्रो. प्रसाद ने देश के प्राकृतिक संसाधनों को सहेजने तथा वैज्ञानिक सोच के प्रति जागरूक किया। उन्होंने जल संस्कृति को महाकुंभ से जोड़ कर नदियों की स्वच्छता पर विशेष जोर दिया और वर्तमान समय में बदलती खान-पान की जीवन शैली को भारतीय ज्ञान परंपरा के अनुरूप करने का आह्वान किया साथ ही युवाजन को तनाव मुक्त रहने के लिए उपाय सुझाए और महाकुंभ को स्वस्थ और भव्य विमर्श के रूप में चिन्हित किया। उन्होंने महाकुम्भ 2025 को जीवन में अनुशासन के सिम्बल के रूप में लेने का विचार भी प्रस्तुत किया।

कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे मानवविज्ञान विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. राहुल पटेल ने अतिथियों का स्वागत माल्यार्पण कर एवं अंगवस्त्र तथा स्मृति चिह्न भेंट कर किया। अपने स्वागत सम्बोधन के दौरान उन्होंने कहा कि महाकुम्भ का आयोजन प्राचीन काल से ही सामाजिक-सांस्कृतिक-धार्मिक विमर्श के लिए होता रहा है। यह विमर्श ज्ञान, विचारों, जीवन मूल्यों, विश्वास और परंपराओं का है जो निरंतर सामाजिक-सांस्कृतिक विशेषताओं के अनुरूप नवीन सृजन की मांग करता है, यह हमें खुद के अंदर के मंथन से उत्पन्न अमृत-तुल्य सत्य को स्वीकार कर विष-रूपी अपवित्र विचारों, व्याधियों और अन्य नकारात्मकताओं को त्यागने तथा उनका दमन करने का आग्रह करता है। उन्होंने महाकुंभ के विभिन्न आयामों को मानवविज्ञान के लेंस और उपागमों से समझने पर भी बल दिया।

आई. सी. एस. एस. आर. नई दिल्ली के पोस्ट डॉक्टोरल फ़ेलो डॉ संजय कुमार द्विवेदी ने महाकुम्भ 2025 के दौरान किये गए अपने मानववैज्ञानिक शोधकार्य और कुम्भ के सेक्रेड कॉम्प्लेक्स पर विचार प्रस्तुत किया। संदीप त्रिपाठी ने संस्कृत श्लोक गायन, सुभाषितानि प्रस्तुत किया। संस्कृति विभाग और पांडुलिपि आर्काइव विभाग की तरफ़ से राकेश कुमार वर्मा ने अतिथियों को स्मृति चिन्ह और स्मारिका भेंट की। विद्यार्थियों में अतुल, स्मृति, छवि और शाम्भवी ने महाकुम्भ 2025 के अपने रोचक अनुभव साझा किए।

वरिष्ठ लोक कलाकार श्री राज नारायण पटेल ने गुरु परम्परा पर लोकगीत प्रस्तुत करके कार्यक्रम को संस्कृतिक महत्व प्रदान किया। कार्यक्रम का कुशल संचालन डॉ. संजय कुमार द्विवेदी ने बहुत ही रोचक और ज्ञानात्मक तरीके से किया। धन्यवाद ज्ञापन विभागाध्यक्ष प्रो. राहुल पटेल ने किया। इस अवसर पर मानवविज्ञान विभाग के सभी छात्र, शोध छात्र, सम्मानित कर्मचारीगण उपस्थित रहे।

अर्थशास्त्र विभाग

इलाहाबाद विश्वविद्यालय के अर्थशास्त्र विभाग द्वारा "गीता : लर्निंग ऑन लीडरशिप " शीर्षक पर एक विशेष व्याख्यान का आयोजन 8 फरवरी, 2025 को हुआ ।इस आयोजन के मुख्य वक्ता आई.आई.एम. अहमदाबाद के प्रो० सुनील माहेश्वरी थे। प्रो० माहेश्वरी ने गीता के श्लोकों की प्रासंगिता को विस्तार से समझाया एवं उनकी उपयोगिता पर भी प्रकाश डाला । इस दौरान उन्होंने लीडरशिप के लक्षण को परिभाषित किया तथा जीवन के नैतिक मूल्य, मेडिटेशन के विभिन्न तरीकों, और जीवन जीने के सही तरीकों को विस्तारपूर्वक समझाया ।गीता के श्लोक के माध्यम से ही उन्होंने स्वअध्याय,जीवन में कार्य बुरे कर्मों से बचने के बहुत सारे यत्नों की भी चर्चा की।

इस दौरान उन्होंने श्रोतागण को संबोधित करते हुए बताया कि मनुष्य को एक सफल तथा सुखी जीवन जीने के लिए अपने अंतरात्मा की आवाज को सुनना चाहिए और उसका अनुसरण करने के लिए प्रयासरत रहना चाहिए। व्याख्यान में ही उन्होंने गीता में उल्लेखित कुरुक्षेत्र व धर्म क्षेत्र को विस्तृत तरीके से समझाया । इस कार्यक्रम की अध्यक्षता अर्थशास्त्र विभाग की विभागाध्यक्ष प्रोफेसर किरण सिंह ने किया। कार्यक्रम में अर्थशास्त्र विभाग के पुरातन छात्र शिशिर संदीपन अपने पूरे 1986 क्लासिक बैच के साथ उपस्थित रहे ,इसके साथ ही साथ कार्यक्रम में विभाग के अन्य शिक्षक, शोधार्थी , परास्नातक छात्र ,व स्नातक छात्र आदि उपस्थित रहे।

Department of Education

The University firmly believes in the holistic development of the mind, body and the soul, and in keeping with this belief the Department of Education (PG Association), University of Allahabad, along with IQAC organized a gala sports event on 21st February, 2025, under the aegis of Prof. Dhananjai Yadav, the Head of the Department of Education. The president of the PG Association, Dr.Saroj Yadav welcomed the chief guest of the event Prof. Archana Chahal, Head, Department of Physical Education, University of Allahabad.

The event saw enthusiastic participation from both the staff and the students. Several indoor and outdoor competitions were held like chess, tug-of-war, kho-kho and lemon-spoon race. The chief guest before encouraging the winners with prizes, gave many important health tips. The event was smoothly managed and supervised by the faculty members with the help of the research scholars. A vote of appreciation was proposed by Dr. Tushar Gupta, coordinator, PG Association.

Department of Sociology

"Mahakumbh 2025 and the Calling of Planetary Lokasamgraha"

The Department of Sociology organized a special lecture on the topic entitled "Mahakumbh 2025 and the Calling of Planetary Lokasamgraha" on 22nd February, 2025. While addressing the gathering, Prof. Ananta Kumar Giri from the Madras Institute of Development Studies (MIDS) spoke about how Mahakumbh large social gatherings facilitate secularism in Indian society. He said people have come together to burn their own ego in the confluence of Sangam. He argued that despite Mahakumb drawing its inspiration from Hinduism, it attracts people from all the sections of social groups.

Prof. S.K. Sharma, Head, Department of English, University of Allahabad and also the Chairperson of the session appealed to the students to distinguish between the western knowledge system and the Indian Knowledge System. He advocated that we need to think, understand and reflect through the Indian Knowledge System. He said democracy is at its best seen at Mahakumbh by citing that everybody has equal rights.

While delivering the welcome address, Prof. Ashish Saxena, Head, Department of Sociology emphasized the need to acknowledge the challenges in organizing the Mahakumb mela so that the cultural value may be preserved. A large number of students, research scholars and faculty members namely Dr. Deborah Darlianmawii, Dr. MunnerIllath, Dr. Keyoor and Dr.Sathish, C actively participated in the event. Dr.Deborah Darlianmawii moderated the event; Dr. Sathish, C introduced the speaker of the program and Dr. Keyoor Pathak proposed the final vote of thanks.

संस्कृत, पालि, प्राकृत एवं प्राच्य भाषा विभाग

दिनांक 19 फ़रवरी, 2025 को प्रातः 10:15 पर संस्कृत, पालि, प्राकृत एवं प्राच्य भाषा विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय के द्वारा "भारतीय ज्ञान परम्परा एवं महर्षि दयानन्द सरस्वती" विषयक द्विदिवसीया अन्ताराष्ट्रीया संगोष्ठी का प्रारम्भ हुआ। यह संगोष्ठी महर्षि दयानन्द सरस्वती के 200 वीं जन्म जयंती वर्ष के उपलक्ष्य पर आयोजित की गई । इलाहाबाद विश्वविद्यालय प्रयागराज की माननीया कुलपति महोदया प्रोफेसर संगीता श्रीवास्तव की स्वीकृति, आशीर्वाद एवं अनुदान से यह संगोष्ठी आयोजित की गई।

संगोष्ठी के उद्घाटन सत्र का सञ्चालन संस्कृत विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय की सहायक आचार्या डॉ प्रतिभा आर्या ने किया। उद्घाटन सत्र में सर्वप्रथम विभाग की छात्राओं द्वारा वैदिक मङ्गलाचरण किया गया, सभी अभ्यागत अतिथियों, विद्वानों एवं वक्ताओं को पुष्पगुच्छ, प्रावार(शॉल) तथा स्मृतिचिह्न प्रदान कर स्वागत एवं अभिनन्दन किया गया।

एक शोधग्रन्थ जो डॉ प्रतिभा आर्या द्वारा सम्पादित है " युगद्रष्टा दयानन्द : एक समग्र चिन्तन" का लोकार्पण किया गया। अतिथियों का वाचिक स्वागत एवं अभिनन्दन संस्कृत विभागाध्यक्ष प्रो. प्रयाग नारायण मिश्र ने किया ।

कार्यक्रम की अध्यक्षता इलाहाबाद विश्वविद्यालय के कुलसचिव प्रो. आशीष खरे ने किया, मुख्य अतिथि स्वामी चिदानन्द सरस्वती जी जो परमार्थ निकेतन आश्रम ऋषिकेश के अध्यक्ष हैं वे अस्वास्थ्यवशात् उपस्थित नही हो सके, विशिष्ट अतिथि के रूप में जे .एन.यु नई दिल्ली के लब्धप्रतिष्ठ आचार्य प्रो सुधीर कुमार आर्य रहे, सारस्वत अतिथि के रूप में पाणिनि कन्या महाविद्यालय वाराणसी की प्राचार्या आचार्या नंदिता शास्त्री जी उपस्थित रहीं, मुख्य वक्तृत्वेन अमेठी से पधारे प्रोफेसर ज्वलन्त कुमार शास्त्री जी उपस्थित रहे, इसके अतिरिक्त दिल्ली विश्वविद्यालय से प्रो धर्मेन्द्र कुमार शास्त्री जी, गुरुकुल कांगडी विश्वविद्यालय से प्रो ब्रह्मदेव जी सपत्नीक पधारे, देश के नैकविध विश्वविद्यालयों से तथा महाविद्यालयों से सुधी विद्वान् इस कार्यक्रम में उपस्थित रहे । संयोजिका ने महर्षि दयानन्द के जीवन परिचय से लेकर कर्तृत्व परिचय के साथ संगोष्ठी के उद्देश्य को प्रस्तुत किया।

तत्पश्चात् बीजवक्तव्य देते हुये आचार्य ज्वलन्त कुमार शास्त्री जी ने कहा कि १२ फरवरी १८२५ ईस्वी को उनका जन्म हुआ था, चौदह वर्ष तक समग्र शास्त्रों का निरन्तर अध्ययन किया तथा योगविद्या में निष्णान्त हो गए इतोपि ज्ञान की कमी है ऐसा प्रतीत होने पर मथुरा में श्री गुरु विरजानन्द दण्डी स्वामी जी से अष्टाध्यायी को भलीभांति अध्ययन किया , दण्डी स्वामी जी ने गुरुदक्षिणा में दयानन्द से भारतखण्ड का उद्धार करने हेतु उनसे वचन लिया ।

सत्राध्यक्ष के रूप में इलाहाबाद विश्वविद्यालय के कुलसचिव प्रो आशीष खरे जी ने अध्यक्षीय उद्बोधन प्रस्तुत किया। इन्होंने बताया कि इलाहाबाद विश्वविद्यालय वर्तमान में अपने पूर्ण उन्नति को प्राप्त है। भारतीय ज्ञान परम्परा में पराधीनता काल में पर्याप्त समाज सुधारक आएं परन्तु महर्षि दयानन्द जी ऐसे थे जो सुधार के लिए शिक्षा को प्रबल बनाने के समर्थक थे, वर्तमान में यदि अपने डि एन ए सिक्वेन्स को यदि ठीक किया जाए तो अनेक बिमारियों को ठीक किया जा सकता है इसको बहुत पहले महर्षि दयानन्द ने अपनी संस्कारविधि में दिग्दर्शित किया। दयानन्द सरस्वती जी ने बहुत सारी पुस्तकें हिन्दी में लिखी वे हिन्दी भाषा के पक्षधर थे क्योंकि सामान्य जनसाधारण की बातो में कही गयी बात का असर कई दूर तक रहता है। इन्होंने बताया कि दयानन्द जी ने धार्मिक सामाजिक सुधार भी पर्याप्त किए। आशीष खरे जी का मानना है कि वैदिक कालावधि में महिलाओं की शैक्षिक एवं सामाजिक स्थिति पर्याप्त अच्छी थी , दयानन्द जी ने राजधर्म पर भी विचार किया है। महर्षि दयानन्द ने कहा है कि कला, विज्ञान और संस्कृत की शिक्षा दी जानी चाहिए। अतः कहा जाए तो महर्षि दयानन्द जी को अवश्य जानना चाहिए। अन्त में धन्यवाद ज्ञापन संस्कृत विभाग की सह आचार्या डॉ. निरुपमा त्रिपाठी ने किया।

इसके पश्चात् 2 बजे से द्वितीय सत्र का प्रारम्भ हुआ जिसके सञ्चालक इलाहाबाद विश्वविद्यालय के संस्कृत विभाग के सहाचार्य डॉ विनोद कुमार जी रहे तथा सत्राध्यक्ष बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय से पधारे प्रो सदाशिव कुमार द्विवेदी जी रहे, मुख्यवक्ताओं में प्रथम वक्त्री जम्मू विश्वविद्यालय से पधारी डॉ. प्रियंका आर्या जी ने अपने वक्तव्य में कहा कि महर्षि दयानन्द जी अपने वेद भाष्य में मन्त्र के उपर विषय निगदित करते हैं फिर भाष्य में पदार्थ करते हैं फिर भावार्थ करते हैं।

तत्पश्चात् 4 बजे से तृतीय सत्र प्रारम्भ हुआ जिसका सञ्चालन डॉ सन्त प्रकाश तिवारी के द्वारा किया गया, इस सत्र के मुख्य वक्ता डॉ कल्पना आर्या दिल्ली विश्वविद्यालय, डॉ अमृता, हिन्दी विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय तथा प्रो ब्रह्मदेव जी गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय मञ्चासीन रहे, इस सत्र के अध्यक्ष हिन्दी विभाग इलाहाबाद विश्वविद्यालय के प्रो कुमार वीरेन्द्र जी रहे।

संस्कृत, पालि, प्राकृत एवं प्राच्य भाषा विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय के द्वारा आयोजित "भारतीय ज्ञान परम्परा एवं महर्षि दयानन्द सरस्वती विषयक द्विदिवसीया अन्ताराष्ट्रीया संगोष्ठी में प्रातः 9 बजे से ही द्वितीय दिवस का प्रारम्भ हुआ। प्रथमतः तीन सत्र अंतर्जालीय माध्यम से सम्पन्न हुए। जिसमें दो सत्र प्रतिभागियों के थे एवं एक सत्र विदेशी वक्ताओं के थे।

वैदेशिक सत्र के सत्राध्यक्ष प्रो (डॉ.) विनय विद्यालंकार जी थे। मुख्य वक्ता के रूप में डॉ. संजय शास्त्री जी जो कि कनाडा से जुड़े थे साथ ही एक और वक्ता श्री विश्रुत आर्य जी थे तथा विशिष्टवक्त्री के रूप में डॉ. ज्योत्स्ना द्विवेदी जी थी।

संगोष्ठी के प्रथम ऑनलाइन सत्र में लगभग 20 प्रतिभागियों ने अपना शोध पत्र प्रस्तुत किया। इस सत्र की अध्यक्षता दिल्ली विश्वविद्यालय के संस्कृत विभाग में सह आचार्य डॉ मोहिनी आर्य ने किया। इस सत्र में अभ्यागत अतिथियों का स्वागत इलाहाबाद विश्वविद्यालय के सहायक आचार्य डॉ संत प्रकाश तिवारी जी ने किया तथा संचालन डॉक्टर अनिल कुमार ने किया।

इसके साथ ही द्वितीय ऑनलाइन सत्र भी हुआ जिसका संचालन डॉक्टर ललित कुमार ने किया ।इस सत्र की अध्यक्षता डॉक्टर वेदव्रत जी गुरुकुल कांगड़ी ने किया इस सत्र में लगभग 22 प्रतिभागियों ने अपने शोध पत्र प्रस्तुत किए।

इसके साथ ही तिलक भवन , इलाहाबाद विश्वविद्यालय में 9 बजे से 11 बजे तक मुख्य सत्र का प्रारम्भ वैदिक मंगलाचरण के साथ हुआ, इस सत्र का संचालन डॉ विकास शर्मा ने किया। इस सत्र की अध्यक्षता प्रो आशीष सक्सेना समाज शास्त्र विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय ने किया । मुख्य अतिथि प्रो ऋषिकांत पाण्डे दर्शन शास्त्र विभाग इलाहाबाद विश्वविद्यालय रहें। मुख्य वक्ता डॉ बृहस्पति मिश्रा हिमाचल विश्वविद्यालय ने वक्तव्य में महर्षि दयानन्द के वेद भाष्य की प्रक्रिया पद्धति पर प्रकाश डालते हुए उनके कार्यों की चर्चा की तथा डॉक्टर देवेश प्रकाश आर्य ,सचिव विश्व वेद परिषद् नई दिल्ली ने स्वामी जी के सामाजिक कार्यों की देन उनके समग्र चिंतन को सबके समक्ष रखा।

इस सत्र के अध्यक्ष प्रो आशीष सक्सेना ने स्वामीजी के सामाजिक कार्यों की चर्चा की और कहा कि वस्तुतः हमारा समाज, समाज बनने लायक तभी हो सकता है जब उसमें रहने वाली सभी बेटियों को एकता मिले और वो एकता कैसे मिल सकती है जब समाज बराबर हो, सभी के लिए अधिकारो का, व्यवस्थाओं का समान वितरण हो और समान वितरण परिदृश्यता होती है जब राजनीतिक रूप से, आर्थिक रूप से और व्यावहारिक रूप समान परिदृश्य हो।

इसके समानांतर संस्कृत विभाग के विभिन्न प्रकोष्ठों में 8 सत्र प्रतिभागियों के लिए चलाए गए।

सङ्गोष्ठी का सप्तम सत्र (पूर्वाह्न 9:00-11:00) २० फरवरी को विभाग के लाइब्रेरी हॉल में सम्पादित हुआ । इसकी अध्यक्षता संस्कृत विभाग के पूर्वाध्यक्ष प्रो. उमाकान्त यादव ने किया तथा मञ्च सञ्चालन प्रो. लेखराम दन्नान ने किया । सत्र के मुख्य वक्ता डॉ. टङ्केश्वरी पटेल महोदय थे। इन सभी सत्रों के माध्यम से कुल 167 शोध पत्र प्रस्तुत किए गए जिनका संचालन विभागीय शिक्षक एवं अध्यक्षता विभिन्न विश्वविद्यालयों एवं महाविद्यालयों के शिक्षकों ने किया।

इस सम्पूर्तिसत्र में सत्राध्यक्ष के रूप में प्रो डॉ ओमप्रकाश पाण्डेय, पूर्व अध्यक्ष संस्कृत विभाग लखनऊ विश्वविद्यालय रहे। मुख्य वक्ता के रूप में प्रो धर्मेन्द्र कुमार शास्त्री, दिल्ली विश्वविद्यालय रहें, सारस्वत अतिथि के रूप में प्रो. अनुपम पाण्डेय जी पूर्व विभागाध्यक्ष, भूगोल विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय प्रयागराज रहे, मुख्यातिथि के तौर पर प्रो ललित कुमार त्रिपाठी, निदेशक, गंगानाथ झा परिसर, केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय नई दिल्ली रहे। तथा इस सत्र का सञ्चालन डॉ प्रचेतस्, सहायकाचार्य, संस्कृत विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय ने किया ।

INTERNAL COMPLAINTS COMMITTEE (ICC)

The Hon'ble Vice Chancellor has constituted the Internal Complaints Committee (ICC) - A committee constituted to redress complaints of sexual harassment of women at workplace.

The members of the Internal Complaints Committee are as follows:

S. No.	Name	Designation
1.	Prof. Indrani Mukherji, Dept. of English & MEL	Presiding Officer
2.	Smt. Raj Lakshmi Sinha, Advocate, Allahabad High Court	Member
3.	Dr. (Smt.) Shanti Chaudhri	Member
4.	Dr. Devinder Kaur, Associate Professor, Centre of Food Technology	Member
5.	Dr. Kapinder, Associate Professor, Dept. of Zoology	Member
6.	Ms. Jigyasa Kumar, Curator Vizianagram Hall & Museum	Member

R-L : Dr Shanti Chaudhri, Prof Indrani Mukherji, Smt Raj Lakshmi Sinha, Dr Devinder Kaur, Ms Jigyasa Kumar, Dr Kapinder

The reconstituted Committee is meeting regularly for the redressal of complaints.

BOOK OF THE EDITION	**MOVIE OF THE EDITION**
Lamaan by Shreeram Lagoo	***MALEGAON KA SUPERRMAN***

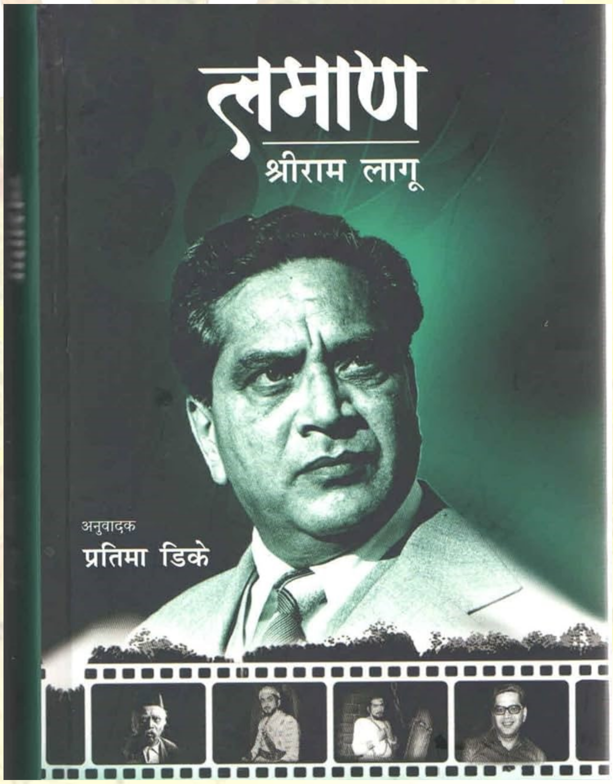

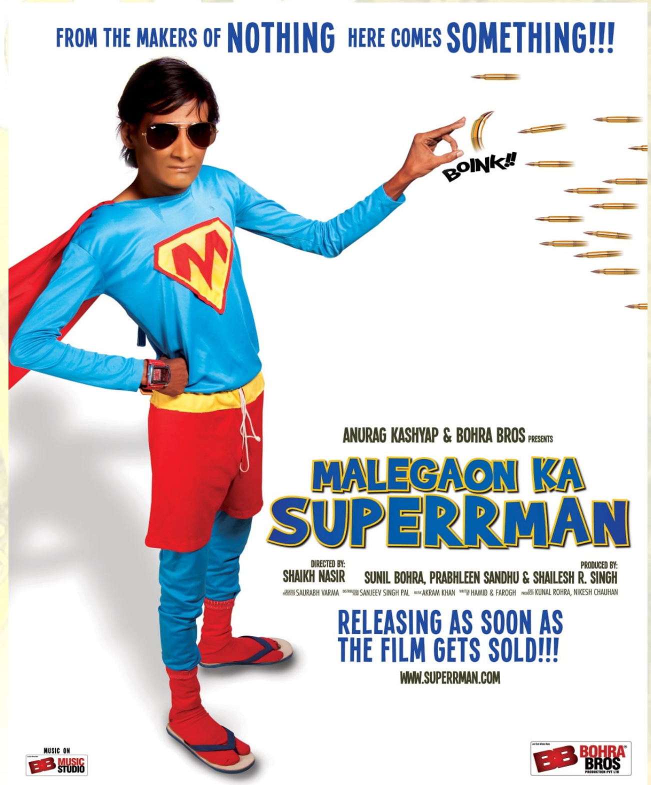

Some Important Instructions for AU TALK

AU Talk is a monthly digital newsletter of the University of Allahabad that shares latest curricular and extra-curricular activities of the university. It seeks to enhance the perception of the university by highlighting its accomplishments in diverse fields of undertaking. Please note that

- AU TALK publishes news about seminars/workshops/conferences that have taken place at any Department or Centre of the University. A piece of news along with a **photograph of the organizers** should be emailed at vizianagramcurator.au@gmail.com
- The magazine publishes informative articles also. Articles should aim to bring out important scientific, ethical, and environmental issues and must be lucid in their message to society. They can be written in Hindi or English. In one edition, the magazine can publish up to four such articles.
- **Do not send pictures capturing garlanding or shawl/memento-giving** moments.
- The magazine should be widely circulated among students and faculty and on all social media platforms so that the excellent work done under the auspices of the University of Allahabad reaches far and wide and benefits all.

Feel free to contact the Editorial Board.